दिनाँक :- 17-08-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय वर्ष (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

एकाई :- बारह

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन की प्रगति (1900-1931 ई०)

प्रगति या विकास के लिए राजनीतिक स्थिरता का होना आवश्यक माना जाता है किंतु पश्चिमी विचारकों की यह धारणा चीन के साथ लागू नहीं होती 1900 से 1931 ई० तक चीन बड़ा अशांत था तथा वहाँ क्रांति - प्रतिक्रांति का दौर-दौर बना हुआ था इसके बावजूद भी चीन का विकास स्थायी गति से अग्रसर हुआ। इसकी पुष्टि निम्नांकित तथ्यों से की जा सकती है :

① आर्थिक विकास

चीन का आर्थिक जीवन सरकारी हस्तक्षेप या निर्देशन से युक्त था अतः राजनीतिक अस्थिरता का इस पर कोई प्रभाव न पड़ा हाँ यह अवश्य हुआ कि राजनीतिक अस्थिरता ने लूटपाट, समुद्री डाका आदि से बढ़ावा दिया जिसने आर्थिक विकास को बुरी तरह से प्रभावित किया गृह युद्ध के कारण सरकार, आवश्यक विकास कार्यक्रमों में हाथ नहीं बँटा सकी, किंतु इसके बावजूद भी आर्थिक क्षेत्र में धीमी गति से प्रगति हुई। प्रथम विश्व युद्ध के बाद प्रगति के चिन्ह स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगे इसका विवरण निम्नांकित है।

(क) व्यापार :- देश का आयात-निर्यात बढ़ गया। यद्यपि 1842-1843 ई० में चीन ने पश्चिमी देशों के साथ संधियाँ कीं तथा इसके कुछ बंदरगाह विदेशियों के लिए खोल दिए गए थे तथापि 19वीं शताब्दी के अंत तक चीन ने

बाहरी देशों के साथ कोई गहरा सम्बन्ध प्रदर्शित नहीं किया।
चीन की भौगोलिक पृथकता, इसका विशाल भाग, शेष दुनिया से अलग-अलग रहने की इसकी प्रवृत्ति, इसके समाज की आत्मनिर्भरता प्रकृति इसकी प्रजातीय एककपता, इसकी सभ्यता की अद्वितीयता तथा इसके आंतरिक यातायात के अभाव ने इसे बाहरी दुनिया से अलग-थलग रखा।
प्रथम विश्व युद्ध के बाद चीन का द्वार पश्चिमी देशों के लिए खुल गया। 1842 ई० में इसके पाँच बंदरगाह (कैंटन, अमॉय फूचो, निंग्पो एंव शंघाई) व्यापार के लिए खोल दिए गए बाद में चीनी सरकार ने स्वेच्छा से कुछ और बंदरगाहों को खोल दिया। 1913 ई० तक संधि बंदरगाहों की संख्या उन्नीस तक हो गई। स्वेच्छा से ग्यारह स्थान विदेशी व्यापार और आवास के लिए खोल दिए गए।
1900 ई० के बाद चीन का विदेशव्यापार बढ़ गया। 1900 से

1910 ई० तक के बीच 211,000,000 से 463,000,000 हैकवान तैल (Haikwan Taels) के मुल्य का आयात हुआ। इसी बीच 159,000,000 से 381,000,000 तैल का निर्यात हुआ 1911 ई० में क्रांति और प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918 ई०) के फलस्वरूप इसका निर्यात बढ़ गया। युद्धोत्तर काल में चीन में राजनीति अस्थिरता के बावजूद इसके विदेश व्यापार में विस्तार हुआ। 1930 ई० 1304,755,642 तैल मुल्य का आयात हुआ। इस प्रकार तीस वर्षों की अवधि में विदेश व्यापार से साढ़े तीन सौ प्रतिशत की वृद्धि हुई। आयात-निर्यात की प्रकृति में भी परिवर्तन हुआ पहले चीन अफीम, कपास तथा अन्य वस्तुओं का आयात करता था। अब इसका आयात कम हो गया। 1902 ई० में कुल आयात का चौदह ग्यारह प्रतिशत अफीम आयात था। 1906 ई० में एक आदेश जारी कर 1917 ई० तक अफीम के

सेवन पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया। 18 मई 1911 ई० को एक समझौता द्वारा 1917 ई० के अंत तक भारत से अफीम के निर्यात पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया। 1913 ई० में भारत सरकार ने चीन को अफीम निर्यात नहीं करने की घोषणा की। 1915 ई० में चीन के पंद्रह प्रांतों में अफीम का उत्पादन बंद कर दिया गया।

किंतु दुर्भाग्यवश 1915 ई० को एक भिन्न परिस्थिति उत्पन्न हो गई। एक प्रांत से दूसरे प्रांत में सैनिक शासन शुरू हुआ। इससे पीकिंग की सत्ता का क्षय हुआ। अफीम का उत्पादन पुनः शुरू किया गया। केवल शांसी (Shansi) में इसके उत्पादन और इस्तेमाल पर रोक लगा दी गई। अन्य प्रांतों में लोग अफीम का सेवन करते रहे। अधिकारी इसका लाभ उठाते रहे। 1924-1925 ई० में इसके उत्पादन में कुछ कमी आई क्योंकि विगत वर्ष इसका उत्पादन काफी हुआ था। इस

Scanned with CamScanner

तरह पूरे विश्व में चीन अफीम का सबसे बड़ा उत्पादक देश बन गया। 1924 ई० में जहाँ भारत में दो मिलियन पौंड अफीम पैदा करता था चीन पचीस मिलियन पौंड उत्पादन करता था। इसके चीनी अन्य नशीली दवाओं का भी इस्तेमाल करने लगे। जापान और जर्मनी नशीली दवाओं की तस्करी करते थे। शंघाई के पट्टे वाले बंदरगाहों से उसका आयात होता था।

1902 ई० में सूती माल तथा अन्य वस्तुओं का बहत्तर प्रतिशत, खाद्यान्नों मिट्टी तेल एवं धातुओं का सत्रह प्रतिशत आयात होता था। 1910 ई० में सूती धागे और सूती माल का छब्बीस प्रतिशत, चावल सात प्रतिशत, धातु और मशीन आठ प्रतिशत, मिट्टी तेल पाँच प्रतिशत, चीनी साढ़े चार प्रतिशत, रेल सामग्रियाँ तीन प्रतिशत, समुद्री उत्पादन दो प्रतिशत, सिगरेट और तंबाकू दो प्रतिशत

ईल सामग्रियाँ तीन प्रतिशत, कोयला दो प्रतिशत, रंग डेढ़ प्रतिशत, दियासलाई एक प्रतिशत, नये कपड़े एक प्रतिशत तथा अन्य मालों का सैंतीस प्रतिशत का आयात होता था। 1930 ई० में कच्चे कपास का 132,66,000 पौंड मूल्य का आयात हुआ। मशीन उपकरणों का आयात नौ मिलियन पौंड से बढ़कर अठहत्तर मिलियन पौंड हो गया। एक पूर्ण आयात का दो सौ छः प्रतिशत हो गया। अब हाथ की जगह मशीन से काम लिया जाने लगा। अब तक चीन में औद्योगिक क्रांति आ गई थी। सूती मालों की अपूर्ति गृह उत्पादन से हो पाती थी। प्रथम विश्व युद्ध में मिट्टी तेल की माँग बढ़ गई थी। इसका प्रयोग घर में रोशनी के लिए दिए जलाने से होता था। दियासलाई का भी आयात किया जाने लगा।

कागज की माँग बढ़ गई क्योंकि अखबार निकलने लगे थे। सड़कों पर मोटर गाड़ी भी दौड़ने लगी।

Scanned with CamScanner